जैन धर्म

परिचय

- जैन धर्म एक प्राचीन धर्म है जो उस दर्शन में निहित है जो सभी जीवित प्राणियों को अनुशासित, अहिंसा के माध्यम से मुक्ति का मार्ग एवं आध्यात्मिक शुद्धता और आत्मज्ञान का मार्ग सिखाता है।

जैन धर्म की उत्पत्ति कब हुई?

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व में जब भगवान महावीर ने जैन धर्म का प्रचार किया तब यह धर्म प्रमुखता से सामने आया।
- इस धर्म में 24 महान शिक्षक हुए, जिनमें से अंतिम भगवान महावीर थे।
- इन 24 शिक्षकों को तीर्थंकर कहा जाता था, वे लोग जिन्होंने अपने जीवन में सभी ज्ञान (मोक्ष) प्राप्त कर लिये थे और लोगों तक इसका प्रचार किया था।
- प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ थे।
- 'जैन' शब्द जिन या जैन से बना है जिसका अर्थ है 'विजेता'।

वर्धमान महावीर

- 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर का जन्म 540 ईसा पूर्व वैशाली के निकट कुण्डग्राम गाँव में हुआ था। वह ज्ञानत्रिक वंश के थे और मगध के शाही परिवार से जुड़े थे।
- उनके पिता सिद्धार्थ ज्ञानत्रिक क्षत्रिय वंश के मुखिया थे और उनकी माता त्रिशिला वैशाली के राजा चेतक की बहन थीं।
- 30 वर्ष की आयु में उन्होंने अपना घर त्याग दिया और एक तपस्वी बन गए।
- उन्होंने 12 वर्षों तक तपस्या की और 42 वर्ष की आयु में कैवल्य (अर्थात दुख और सुख पर विजय प्राप्त की) नामक सर्वोच्च आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया।
- उन्होंने अपना पहला उपदेश पावा में दिया था।
- प्रत्येक तीर्थंकर के साथ एक प्रतीक जुड़ा था और महावीर का प्रतीक सिंह था।
- अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये उन्होंने कोशल, मगध, मिथिला, चंपा आदि प्रदेशों का भ्रमण किया।
- 468 ई.पू. 72 वर्ष की आयु में बिहार के पावापुरी में उनका निधन हो गया।

इस धर्म की उत्पत्ति का कारण?

- जटिल कर्मकांडों और ब्राह्मणों के प्रभुत्व के साथ हिंदू धर्म कठोर व रूढ़िवादी हो गया था।
- वर्ण व्यवस्था ने समाज को जन्म के आधार पर 4 वर्गों में विभाजित किया, जहाँ दो उच्च वर्गों को कई विशेषाधिकार प्राप्त थे।
- ब्राह्मणों के वर्चस्व के खिलाफ क्षत्रिय की प्रतिक्रिया।
- लोहे के औज़ारों के प्रयोग से उत्तर-पूर्वी भारत में नई कृषि अर्थव्यवस्था का प्रसार हुआ।

जैन धर्म के सिद्धांत क्या हैं?

- इसका मुख्य उद्देश्य मुक्ति की प्राप्ति है, जिसके लिये किसी अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं होती है। इसे तीन सिद्धांतों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जिसे थ्री ज्वेल्स या त्रिरत्न कहा जाता है, ये हैं-
  - सम्यकदर्शन
  - सम्यकज्ञान
  - सम्यकचरित

- **जैन धर्म के पाँच सद्धिांत-**
    - अहसिा: जीव को चोट न पहुँचाना
    - सत्य: झूठ न बोलना
    - अस्तेय: चोरी न करना
    - अपरग्रिह: संपत्त‍ि का संचय न करना और
    - ब्रह्मचर्य

जैन धर्म में ईश्वर की अवधारणा

- जैन धर्म का मानना है कि ब्रह्मांड और उसके सभी पदार्थ या संस्थाएँ शाश्वत हैं। समय के संबंध में इसका कोई आद‍ि या अंत नहीं है। ब्रह्मांड स्वयं के ब्रह्मांडीय नियमों द्वारा अपने हसिाब से चलता है।
- सभी पदार्थ लगातार अपने रूपों को बदलते या संशोधति करते हैं। ब्रह्मांड में कुछ भी नष्ट या नर्मिति नहीं कयिा जा सकता है।
- ब्रह्मांड के मामलों को चलाने या प्रबंधति करने के लयि किसी की आवश्यकता नहीं होती है।
- इसलयि जैन धर्म ईश्वर को ब्रह्मांड के नर्मिाता, उत्तरजीवी और संहारक के रूप में नहीं मानता है।
- हालाँकि जैन धर्म ईश्वर को एक नर्मिाता के रूप में नहीं, बल्कि एक पूरण प्राणी के रूप में मानता है।
- जब कोई व्यक्त‍ि अपने सभी कर्मों को नष्ट कर देता है, तो वह एक मुक्त आत्मा बन जाता है। वह हमेशा के लयि मोक्ष में पूरण आनंदमय अवस्था में रहता है।
- मुक्त आत्मा के पास अनंत ज्ञान, अनंत दृष्ट‍ि, अनंत शक्त‍ि और अनंत आनंद है। यह जीव जैन धर्म का देवता है।
- प्रत्येक जीव में ईश्वर बनने की क्षमता होती है।
- इसलयि जैनियों का एक ईश्वर नहीं है, लेकनि जैन देवता असंख्य हैं और उनकी संख्या लगातार बढ़ रही है क्योंकि अधिक जीवति प्राणी मुक्त‍ि प्राप्त करते हैं।

अनेकांतवाद

- जैन धर्म में अनेकांतवाद की एक मौलकि धारणा है कि कोई भी इकाई एक बार में स्थायी होती है, लेकनि परविर्तन से भी गुज़रती है जो नरिंतर और अपरहिार्य है।
- अनेकांतवाद के सद्धिांत में कहा गया है कि सभी संस्थाओं के तीन पहलू होते हैं: द्रव्य, गुण, और पर्याय।
- द्रव्य कई गुणों के लयि एक आधार के रूप में कार्य करता है, जनिमें से प्रत्येक स्वयं में लगातार परविर्तन या संशोधन के दौर से गुज़र रहा है।
- इस प्रकार किसी भी इकाई में एक स्थायी नरिंतर प्रकृत‍ि और गुण दोनों होते हैं जो नरिंतर प्रवाह **की स्थत‍ि में होते हैं।**

स्यादवाद

- जैन धर्म में स्यादवाद का सद्धिांत महावीर का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान माना जाता है जसिका अर्थ है हमारा ज्ञान सीमति और सापेक्ष है तथा हमें ईमानदारी से इसे स्वीकार करते हुए अपने ज्ञान के असीमति और अप्रश्नेय होने के नरिर्थक दावों से बचना चाहयि। किसी वस्तु को देखने के तरीके (जसि नया कहा जाता है) संख्या में अनंत हैं।
- स्यादवाद का शाब्दकि अर्थ है 'वभिन्नि संभावनाओं की जाँच करने की वधि‍ि'।

अनेकांतवाद और स्यादवाद के बीच अंतर

- इनके बीच मूल अंतर यह है कि अनेकांतवाद सभी भन्नि लेकनि वपिरीत वशिषताओं का ज्ञान है, जबकि स्यादवाद किसी वस्तु या घटना के किसी वशिष गुण के सापेक्ष ववरिण की प्रक्रयिा है।

जैन धर्म के संप्रदाय/वद्यिालय क्या हैं?

- जैन व्यवस्था को दो प्रमुख संप्रदायों में वभिाजति कयिा गया है: **दगिंबर और श्वेतांबर।**
- वभिाजन मुख्य रूप से मगध में अकाल के कारण हुआ जसिने भद्रबाहु के नेतृत्व वाले एक समूह को दक्षणि भारत में स्थानांतरति होने के लयि मजबूर कयिा।
- 12 वर्षों के अकाल के दौरान दक्षणि भारत में समूह सख्त प्रथाओं पर कायम रहा, जबकि मगध में समूह ने अधिक ढीला रवैया अपनाया और सफेद कपड़े पहनना शुरू कर दयिा।
- काल की समाप्त‍ि के बाद जब दक्षणिी समूह मगध में वापस आया तो बदली हुई प्रथाओं ने जैन धर्म को दो संप्रदायों में वभिाजति कर दयिा।

दगिंबर:

- इस संप्रदाय के साधु पूरण नग्नता में वशि्वास करते हैं। पुरुष भक्षिु कपड़े नहीं पहनते हैं जबकि महिला भक्षिु बनिा सलिाई वाली सफेद साड़ी पहनती

हैं।

- ये सभी पाँच व्रतों (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य) का पालन करते हैं।
- मान्यता है कि औरतें मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकतीं हैं।
- भद्रबाहु इस संप्रदाय के प्रतिपादक थे।
- प्रमुख उप-संप्रदाय:
- मुला संघ
- बिसपंथ
- थेरापंथा
- तरणपंथ या समायपंथा
- लघु उप-समूह:
- गुमानपंथ
- तोतापंथ
- **श्वेतांबर**
- साधु सफेद वस्त्र धारण करते हैं।
- केवल 4 व्रतों का पालन करते हैं (ब्रह्मचर्य को छोड़कर)।
- इनका विश्वास है कि महिलाएँ मुक्ति प्राप्त कर सकती हैं।
- स्थूलभद्र इस संप्रदाय के प्रतिपादक थे।
- प्रमुख उप-संप्रदाय:
- मूर्तिपूजक
- स्थानकवासी
- थेरापंथी

जैन धर्म के प्रसार का कारण?

- महावीर ने अपने अनुयायियों को एक आदेश दिया, जिसमें पुरुषों और महिलाओं दोनों को शामिल किया गया।
- जैन धर्म खुद को ब्राह्मणवादी धर्म से बहुत स्पष्ट रूप से अलग नहीं करता, अतः यह धीरे-धीरे पश्चिम और दक्षिण भारत में फैल गया जहाँ ब्राह्मणवादी व्यवस्था कमज़ोर थे।
- महान मौर्य राजा चंद्रगुप्त मौर्य अपने अंतिम वर्षों के दौरान जैन तपस्वी बन गए और कर्नाटक में जैन धर्म को बढ़ावा दिया।
- मगध में अकाल के कारण दक्षिण भारत में जैन धर्म का प्रसार हुआ।
- यह अकाल 12 वर्षों तक चला और भद्रबाहु के नेतृत्व में बहुत से जैन अपनी रक्षा के लिये दक्षिण भारत चले गए।
- ओडिशा में इसे खारवेल के कलिंग राजा का संरक्षण प्राप्त था।

जैन साहित्य क्या है?

जैन साहित्य को दो प्रमुख श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:

- **आगम साहित्य:** भगवान महावीर के उपदेशों को उनके अनुयायियों द्वारा कई ग्रंथों में व्यवस्थित रूप से संकलित किया गया। इन ग्रंथों को सामूहिक रूप से जैन धर्म के पवित्र ग्रंथ आगम के रूप में जाना जाता है। आगम साहित्य भी दो समूहों में विभाजित है:
    - **अंग-अगम:** इन ग्रंथों में भगवान महावीर के प्रत्यक्ष उपदेश हैं। इनका संकलन गणधरों ने किया था।
        - भगवान महावीर के तत्काल शिष्यों को गणधर के नाम से जाना जाता था।
        - सभी गणधरों के पास पूर्ण ज्ञान (कैवल्य) था।
        - उन्होंने मौखिक रूप से भगवान महावीर के प्रत्यक्ष उपदेश को बारह मुख्य ग्रंथों (सूत्रों) में संकलित किया। इन ग्रंथों को अंग-अगम के नाम से जाना जाता है।
    - **अंग-बह्य-आगम (अंग-आगम के बाहर):** ये ग्रंथ अंग-अगम के विस्तार हैं। इन्हें श्रुतकेवलिन द्वारा संकलित किया गया था।
        - कम से कम दस पूर्व ग्रंथों का ज्ञान रखने वाले भिक्षु श्रुतकेवलिन कहलाते थे।
        - श्रुतकेवलिन ने अंग-अगम में परिभाषित विषय वस्तु का विस्तार करते हुए कई ग्रंथ (सूत्र) लिखे। सामूहिक रूप से इन ग्रंथों को अंग-बह्य-आगम कहा जाता है जिसका अर्थ अंग-अगम के बाहर होता है।
        - बारहवें अंग-अगम को दृष्टिवाद कहा जाता है। दृष्टिवाद में चौदह पूर्व ग्रंथ हैं, जिन्हें पूर्वा या पूर्वागम भी कहा जाता है। अंग-अगमों में पूर्व सबसे पुराने पवित्र ग्रंथ थे।
        - वे प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं।
- **गैर-आगम साहित्य:** इसमें आगम साहित्य और स्वतंत्र कार्यों की व्याख्या शामिल है, जो बड़े भिक्षुओं, ननों और विद्वानों द्वारा संकलित है।
    - वे प्राकृत, संस्कृत, पुरानी मराठी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, तमिल, जर्मन और अंग्रेज़ी आदि कई भाषाओं में लिखी गई हैं।
- **जैन वास्तुकला क्या है?**
    - जैन वास्तुकला की कोई अपनी शैली विकसित नहीं हुई। यह लगभग हिंदू और बौद्ध शैलियों का मिला-जुला रूप था।
- **जैन वास्तुकला के प्रकार:**
    - लाना/गुम्फा (गुफाएँ)
    - एलोरा गुफाएँ (गुफा संख्या 30-35)- महाराष्ट्र
    - मांगी तुंगी गुफा- महाराष्ट्र

- गजपंथ गुफा- महाराष्ट्र
- उदयगिरि-खंडगिरि गुफाएँ- ओडिशा
- हाथी-गुम्फा गुफा- ओडिशा
- सित्तनवसल गुफा- तमिलनाडु
- मूर्तियाँ
- गोमतेश्वर/बाहुबली प्रतिमा- श्रवणबेलगोला, कर्नाटक
- अहिंसा की मूर्ति (ऋषभनाथ) - मांगी-तुंगी पहाड़ियाँ, महाराष्ट्र
- जियानलय (मंदिर)
- दिलवाड़ा मंदिर- माउंट आबू, राजस्थान
- गिरनार और पलिताना मंदिर- गुजरात
- मुक्तागिरि मंदिर- महाराष्ट्र
- बसदी: कर्नाटक में जैन मठों की स्थापना या मंदिर।

जैन परिषद

- **प्रथम जैन परिषद**
    - यह तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में आयोजित हुई और इसकी अध्यक्षता स्थूलभद्र ने की थी।
- **द्वितीय जैन परिषद**
    - इसे 512 ईस्वी में वल्लभी में आयोजित किया गया था और इसकी अध्यक्षता देवर्षि क्षमाश्रमण ने की थी।
    - 12 अंग और 12 उपांगों का अंतिम संकलन।
- **जैन धर्म किस प्रकार से बौद्ध धर्म से भिन्न है?**
    - जैन धर्म ने ईश्वर के अस्तित्व को मान्यता दी, जबकि बौद्ध धर्म ने नहीं।
    - जैन धर्म वर्ण व्यवस्था की निंदा नहीं करता, जबकि बौद्ध धर्म निंदा करता है।
    - जैन धर्म आत्मा के पुनर्जन्म में विश्वास करता है जबकि बौद्ध धर्म नहीं करता है।
    - बुद्ध ने मध्यम मार्ग निर्धारित किया, जबकि जैन धर्म अपने अनुयायियों को कपड़े यानी जीवन को पूरी तरह से त्यागने की वकालत करता है।

आज की दुनिया में जैन विचारधारा की प्रासंगिकता क्या है?

जैन धर्म का योगदान

- वर्ण व्यवस्था की बुराइयों को सुधारने का प्रयास।
- प्राकृत और कन्नड़ का विकास।
- वास्तुकला और साहित्य में बहुत योगदान दिया।
- अनेकांतवाद के जैन सिद्धांत का सामाजिक संदर्भ में व्यावहारिक शब्दों में अनुवाद करने का अर्थ होगा तीन सिद्धांत:
    - हठधर्मिता या कट्टरता का अभाव
    - दूसरों की स्वतंत्रता का सम्मान करना
    - शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और सहयोग
- यह बौद्धिक और सामाजिक सहिष्णुता की भावना जगाता है।
- आज के परमाणु संपन्न समाज में लंबे समय तक शांति प्राप्त करने के लिये अहिंसा के सिद्धांत को प्रमुखता मिलती है।
- अहिंसा की अवधारणा बढ़ती हिंसा और आतंकवाद का मुकाबला करने में भी मदद कर सकती है।
- अपरिग्रह (अपरिग्रह) का सिद्धांत उपभोक्तावादी आदतों को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है क्योंकि लालच और स्वामित्व की प्रवृत्ति में बहुत वृद्धि हुई है।
- कार्बन उत्सर्जन करने वाली अवांछित विलासिता को दूर कर इस विचार से ग्लोबल वार्मिंग में भी सुधार किया जा सकता है।

प्रारंभिक परीक्षा में आने वाले प्रश्न

प्रश्न. भारत में धार्मिक प्रथाओं के संदर्भ में "स्थानकवासी" संप्रदाय से संबंधित है। (2018)

A. बौद्ध धर्म
B. जैन धर्म
C. वैष्णववाद
D. शैववाद

प्रश्न. निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/से जैन सिद्धांत पर लागू होता है/हैं?

1. कर्म का नाश करने का सबसे पक्का तरीका है तपस्या करना।

2. हर वस्तु, यहाँ तक कि सबसे छोटे कण में भी आत्मा होती है।
3. कर्म आत्मा का अभिशाप है और इसे समाप्त किया जाना चाहिये।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

A. केवल 1
B. केवल 2 और 3
C. केवल 1 और 3
D. 1, 2 और 3

प्रश्न. प्राचीन भारत के इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन बौद्ध और जैन धर्म दोनों के लिये समान था/हैं?

1. तपस्या और भोग की चरम सीमाओं से बचना
2. वेदों के अधिकार के प्रति उदासीनता
3. कर्मकांडों की प्रभावशीलता से इनकार

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

A. केवल 1
B. केवल 2 और 3
C. केवल 1 और 3
D. 1, 2 और 3

प्रश्न. अनेकांतवाद निम्नलिखित में से किसका एक प्रमुख सिद्धांत और दर्शन है?

A. बौद्ध धर्म
B. जैन धर्म
C. सिख धर्म
D. वैष्णववाद

मुख्य परीक्षा में आने वाले प्रश्न

प्रश्न. भारत में जैन धर्म और बौद्ध धर्म के उदय के कारणों एवं उनके प्रभाव की चर्चा कीजिए। (150 शब्द)

प्रश्न. बताएँ कि जैन धर्म का मूल दर्शन विभिन्न सामाजिक और पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने में कैसे मदद कर सकता है। (150 शब्द)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/jainism-1